Yaha Sanskrita Se Kaisa Viraga

यह संस्कृत से कैसा विराग

Document Information

Text title : Yaha Sanskrita Se Kaisa Viraga

File name : yahasanskRRitasekaisAvirAga.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

यह संस्कृत से कैसा विराग

यह संस्कृत से कैसा विराग ? । ०
जिसने ही जीवनदान दिया,
शुभ कर्मयोग का ज्ञान दिया,
सबसे ऊँचा सम्मान दिया,
कर दैन्य निराश दूर चूर–
"उत्तिष्ठत" का वरदान दिया,
उस वन्द्य वत्सला माता का–
यह कैसा निर्घृण परित्याग ? । १
इसके विद्यालय श्री-विहीन,
इसके सेवक के मुख मलीन,
दिन प्रतिदिन इसकी दशा दीन,
पर छोड़ इसे तुम अपने को-
कह सकते कैसे ऋषिकुलीन,
अब नहीं समय यह सोने का-
ओ बन्धु, आज भी जाग जाग । २
अब इस को आज बचाना है,
उन्नति के पथ पर लाना है,
इसका दुख-दैन्य मिटाना है,
इसकी शिक्षा-संदेशों से-
आगे यह राष्ट्र बढ़ाना है,
कुल में इस मातृ-उपेक्षा का-
है उचित लगाना नहीं दाग । ३
कर बन्द अन्य सब काम-काज,
पूजा का ले साहित्य साज,
सँग में लेकर सारा समाज,

इस मातृ-उपेक्षा के अघ का-
हम कर लें प्रायश्चित्त आज;
है जब तक दग्ध नहीं करती–
इस देवी की अभिशाप-आग ।
यह संस्कृत से कैसा विराग ? । ४

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Yaha Sanskrita Se Kaisa Viraga
pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*